जिंदगी में आगे बढ़ना है तो दूसरों पर निर्भर होना छोड़ दीजिए।
– अज्ञात

दुनिया ने राहत की सांस ली

इस व्यापार युद्ध में अमेरिका ने चीन से आने वाले 550 अरब डॉलर के उत्पादों पर शुल्क बढ़ा दिया, जबकि चीन ने ऐसी ही कार्रवाई अमेरिका से आने वाली 185 अरब डॉलर की वस्तुओं पर की।

मनीषा गुरूरानी।

अमेरिका और चीन के बीच लगभग दो साल के ट्रेड वॉर के बाद हुए व्यापार समझौते की खबर से दुनिया ने राहत की सांस ली है। इसे समझौते का पहला चरण कहा जा रहा है, जिसके तहत चीन व्यापार शुल्क का एक हिस्सा हटाए जाने की एवज में अगले दो साल में अमेरिका से 200 अरब डॉलर की सालाना खरीदारी करेगा। इसमें 50 अरब डॉलर के कृषि उत्पाद भी शामिल हैं, जो अमेरिकी चुनाव में भावनात्मक मुद्दे का रूप ले सकते हैं। इसके अलावा अमेरिकी बौद्धिक संपदा अधिकार का सम्मान करने और अपनी मुद्रा की विनिमय दरों में कृत्रिम बदलाव न करने की बात चीन बाकायदा लिखकर दे रहा है। अमेरिकी वित्त मंत्रालय ने मुद्रा के साथ छेड़छाड़ करने वाले देश का बिल्ला चीन से पहले ही हटा लिया था।

दुनिया की दोनों चोटी की अर्थव्यवस्थाओं में तनाव 22 जनवरी 2018 को शुरू हुआ, जब ट्रंप ने चीन में बने सौर पैनलों और वाशिंग मशीनों पर शुल्क लगाने की घोषणा कर दी। इसके बाद एक–दूसरे पर जवाबी शुल्क का हमला शुरू हो गया। इस व्यापार युद्ध में अमेरिका ने चीन से आने वाले 550 अरब डॉलर के उत्पादों पर शुल्क बढ़ा दिया, जबकि चीन ने ऐसी ही कार्रवाई अमेरिका से आने वाली 185 अरब डॉलर की वस्तुओं पर की। अमेरिका ने चीन पर टेक्नॉलजी चोरी करने और अपनी मुद्रा की कीमत नीचे रखने का आरोप भी लगाया। दरअसल, अमेरिका और ज्यादातर पश्चिमी देश तकनीक के मामले में चीन की रफ्तार से खासे परेशान हैं। अमेरिका ने ट्रेड वॉर की आड़ लेकर उसकी तकनीकी प्रगति में अड़ंगा डालने की चाल चली लेकिन जल्द ही इसका खामियाजा खुद अमेरिका को ही भुगतना पड़ गया। पिछले कुछ समय से अर्थशास्त्रियों की यह गुहार अलग–अलग कोनों से सुनाई देने लगी है कि पूरे विश्व में स्लोडाउन आ रहा है, जिसकी कुछ जवाबदेही चीन–अमेरिका ट्रेड वॉर पर भी आती है। इससे अमेरिकी वोटरों में संदेश यह जा रहा है कि राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने अपनी जिद के चलते वर्ल्ड इकॉनमी को खतरे में डाल दिया है। चुनावी साल में ट्रंप यह कलंक अपने सिर नहीं लेना चाहते। कई सर्वेक्षणों से साबित हुआ है कि अमेरिकियों का एक बड़ा तबका ट्रेड वॉर को नापसंद करता है।

चीन भले ही अमेरिका से उतना न खरीदता हो जितना उसे बेचता है, लेकिन अमेरिका के कई उद्योगों और उनमें मौजूद नौकरियों का अस्तित्व चीन से आने वाले अधबने सामानों पर ही निर्भर करता है। यही नहीं, अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेड के अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि सामानों की बढ़ी कीमतों के चलते एक औसत अमेरिकी परिवार पर सालाना 6 हजार डॉलर का बोझ बढ़ गया है। इन बातों ने ट्रंप को अपने कदम वापस खींचने पर मजबूर किया है। बहरहाल, यह समझौते की शुरुआत है और देर–सबेर इसके दूसरे चरण के लिए भी बातचीत शुरू हो जाएगी। उम्मीद करें कि इससे विश्व व्यापार में जो सकारात्मक माहौल बनेगा, उसकी लहर ट्रेड वॉर को पूरी तरह खत्म कर देगी।

संतों की आहें

डॉ. अर्चिका दीदी।

धर्म-दर्शन

सूक्ष्म जगत में संतों की आहें बहुत काम करती हैं। यह शक्ति इलेक्ट्रॉनिक शक्ति से भी ज्यादा कार्य करती है। गुजरात में द्वारका के एक संत स्वामी केशवानंदजी के साथ ऐसा ही जुल्म हुआ था। उनको बलात्कार के झूठे मामले में घसीटा गया था और 12 साल की सजा दी गयी थी। अधिकारी आपस में मिल गये थे। केशवानंदजी को मीडिया के द्वारा इतना बदनाम किया गया था कि कोई वकील उनकी तरफ से केस लड़ने को तैयार नहीं हुआ। आखिर उनको जेल भेज दिया गया। लेकिन जिस अधिकारी ने यह षड्यंत्र रचा था उसको गोधरा में चीते ने मार डाला। दूसरा अधिकारी अशांति की खाई में जा गिरा, तीसरे अधिकारी को कुछ और भोगना पड़ा... वे तो तबाह हो गये, परंतु केशवानंदजी को तो अभी भी वहाँ के लोग मानते हैं, उनका आदर–सत्कार करते हैं।

संपादकीय

ब्याज के बंधन खोलेंगे

अमेरिका में 'पे ऐंड स्टे' गिरोह का भंडाफोड़ होने से वहां अनेक भारतीय छात्र मुसीबत में फंस गए हैं। दरअसल बीते बुधवार को एक फर्जी विश्वविद्यालय के सहारे चल रहे एक इमिग्रेशन रैकेट का पता चला। इसे चलाने के आरोप में आठ भारतीय व भारतीय मूल के अमेरिकी लोगों को गिरफ्तार किया गया। उसके बाद अमेरिका के आव्रजन एवं सीमा शुल्क प्रवर्तन विभाग ने विश्वविद्यालय से 130 छात्रों को भी गिरफ्तार कर लिया, जिनमें 129 भारतीय हैं। आरोप है कि ये छात्र इसमें पढ़ने के लिए रजिस्टर्ड थे, लेकिन पढ़ाई करने के बजाय देश भर में काम कर रहे थे। छात्रों की गिरफ्तारी से भारत में उनके परिजनों में हड़कंप मच गया। उनका कहना है कि छात्रों को यह पता नहीं था कि यूनिवर्सिटी फर्जी है।

छात्रों से कहा गया था कि अगर वे इसमें दाखिला लेते हैं तो उन्हें काम करने की अनुमति मिलेगी। उन्हें लगा कि यह एक अधिकृत यूनिवर्सिटी है और उन्हें वर्क प्रोग्राम के लिए एफ–1 वीजा मिल जाएगा। लेकिन वे उस जाल में फंस गए। बावजूद इसके अमेरिकी प्रशासन ने इन छात्रों के साथ ऐसा सख्त रवैया अपनाया जैसे वे अपराधी हों। हिरासत के दौरान कई छात्रों को ट्रैकिंग डिवाइस लगाई गई। उन्हें एक सीमा से बाहर नहीं जाने को कहा गया। हालांकि प्रशासन के इस रवैये की आलोचना भी हो रही है। भारतीय मूल के प्रतिष्ठित अमेरिकी नागरिकों और कुछ मीडिया संगठनों ने कहा है कि निर्दोष छात्रों को फंसाना गैरकानूनी और अनैतिक है।

भारत ने छात्रों को हिरासत में लिए जाने पर फिक्र जताते हुए अमेरिकी दूतावास को शनिवार को 'डिमार्श' जारी किया। भारत ने उन छात्रों तक राजनयिक पहुंच की मांग भी की है। विदेश मंत्रालय ने अमेरिकी दूतावास से कहा कि ऐसा हो सकता है कि छात्रों को झांसे में ले लिया गया हो।

इधर भी अंतिम रूप से प्रत्याशी का नाम तय होने में अभी काफी वक्त लगेगा। लेकिन शुरुआती चरण में जिन दो नामों की चर्चा सबसे ज्यादा है, वे हैं कमला हैरिस और तुलसी गबार्ड।

प्रत्याशियों को लेकर चर्चा शुरू

नवीन।

अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में अभी समय बाकी हैं, मगर वहां की चुनावी प्रक्रिया ऐसी है कि संभावित प्रत्याशियों को लेकर चर्चा अभी से शुरू हो गई है। राष्ट्रपति पद पर रहते हुए वहां एक बार ही चुनाव लड़ा जा सकता है और मौजूदा रिपब्लिकन राष्ट्रपति ट्रंप अगला चुनाव लड़ने का इरादा जाहिर कर चुके हैं तो ज्यादा गहमागहमी विपक्षी डेमोक्रेटिक खेमे में ही है। इधर भी अंतिम रूप से प्रत्याशी का नाम तय होने में अभी काफी वक्त लगेगा। लेकिन शुरुआती चरण में जिन दो नामों की चर्चा सबसे ज्यादा है, वे हैं कमला हैरिस और तुलसी गबार्ड।

खास बात यह कि ज्यादा बातें वहां इन दोनों के हिंदुस्तानी कनेक्शन को लेकर ही हो रही हैं। 54 साल की कमला हैरिस भारतीय मां श्यामला गोपालन और जमैकन पिता डॉनल्ड हैरिस की संतान हैं। लेकिन जब वे सात साल की थीं तभी उनके माता–पिता का तलाक हो गया और मां ने उन्हें अकेले ही पाला। दूसरी तरफ कांग्रेस के लिए चौथी बार चुनी जा चुकीं 37 साल की तुलसी गबार्ड हवाई के स्टेट सीनेटर माइक गबार्ड और कैरल पॉर्टर गबार्ड की बेटी हैं। पिता माइक कैथलिक हैं पर मां–बेटी हिंदू धर्म अपना चुकी हैं। यही पृष्ठभूमि तुलसी गबार्ड को हिंदुस्तानियों की नजर में खास बनाती है।

अमेरिकी नजरिए से देखा जाए तो यह कोई खास बात नहीं है। वहां की संस्कृति अलग–अलग पृष्ठभूमि वाले इतने सारे लोगों को खुद में समेटे हुए है कि त्वचा के रंग से जुड़े कुछ पूर्वाग्रहों को छोड़ दें तो बाकी विविधताएं आमतौर पर सार्वजनिक जीवन में किसी का ध्यान नहीं खींचतीं। इसे ग्लोबलाइजेशन से पहले के भूमंडलीकरण का परिणाम ही कहेंगे कि अमेरिका में विदेशी मूल के लोग इतनी बड़ी संख्या में ऊंचे पदों पर बैठे दिखाई देते हैं। नजरिए की यह उदारता शायद ही दुनिया में कहीं और दिखती हो। बहरहाल, अमेरिका में भी अश्वेत राष्ट्रपति पहली बार बराक ओबामा के रूप में 2008 में देखने को मिला। महिला राष्ट्रपति का आना अभी बाकी है और ईसाई के अलावा किसी और धर्मावलंबी के सर्वोच्च पद पर पहुंचने का भी कोई उदाहरण नहीं है। इस दृष्टि से अगला चुनाव खास हो सकता है। खासकर तुलसी गबार्ड के लड़ने और जीतने की स्थिति में, जो न केवल महिला हैं बल्कि हिंदू भी हैं।

मगर समाज चाहे जितना भी लिबरल दिखे, राजनीति में कब कौन–सी चीज मुद्दा बन जाए, कोई नहीं जानता। सो आश्चर्य नहीं कि ये दोनों संभावित प्रत्याशी अपनी पृष्ठभूमि को लेकर खासी सतर्क हैं। कमला हैरिस से पूछा जाता है कि आप खुद को अफ्रीकन–अमेरिकन मानती हैं या इंडियन–अमेरिकन तो वह जोर देकर कहती हैं, 'प्राउड अमेरिकन'। ऐसे ही तुलसी गबार्ड हिंदू धर्म से अपने जुड़ाव को रेखांकित करते हुए भी आरएसएस से खुद को पूरी तरह अलग बताने में कोई संकोच नहीं करतीं। देखना होगा कि अगली चुनाव प्रक्रिया अमेरिकी समाज का कितना खुला या संकीर्ण चेहरा सामने लाती है।

अष्टयोग- 4925

	1		4		5	2
2	28	4	40	7	35	4
	2			4	7	
5	28		38		34	1
	2	6		5		7
3	31	2	24		30	
7	6		4			5

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 4924 का हल

1	2	5	6	4	7	3
2	26	4	40	7	38	4
4	2	6	3	5	1	7
5	34	3	37	6	30	1
6	1	7	4	3	5	2
3	33	2	24	1	27	6
7	6	1	4	2	3	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

कमाता है पर काम नहीं देता सोशल मीडिया

मुकुल श्रीवास्तव। बीता दशक सोशल मीडिया के लिए बेहद अहम रहा है। जब कभी सोशल मीडिया की बात की जाएगी, साल 2010 से शुरू होने वाले दशक को अलग से रेखांकित किया जाएगा। यही वह दौर था जब सोशल मीडिया फला–फूला और उसके राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों की चर्चा शुरू हुई। भारत इससे अछूता नहीं रहा, बल्कि वह इसकी धुरी ही बन गया। साल 2010 में जो सोशल मीडिया आशाओं का प्रतीक बन कर उभर रहा था, साल 2020 आते–आते वह फेक न्यूज और सामाजिक माहौल बिगाड़ने जैसे आरोपों से घिर गया। फेसबुक, ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के चौतरफा प्रभावों पर काफी बहस हो चुकी है, पर इस दशक में इसके आर्थिक पक्ष पर बहुत कम बातचीत हुई है। आश्चर्य की बात है कि आज 'नौकरी डॉट कॉम' पर सोशल मीडिया से संबंधित केवल 19,057 नौकरियां हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक 2018 के कारोबारी साल में फेसबुक इंडिया के मुनाफे में 40 प्रतिशत उछाल आया था।